ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

# बुद्ध के मूल सिद्धान्त
# Core Principles of Buddha

Paper Submission: 05/02/2021, Date of Acceptance: 24/02/2021, Date of Publication: 25/02/2021

**सुनीता सिंह**
असिस्टेंट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग,
यूथ गर्ल्स डिग्री कालेज,
बाराबंकी, उ०प्र०, भारत

**सारांश**

प्रत्येक धर्म का आधार कोई न कोई दर्शन होता है। धर्म का महत्व भवन दर्शन की नींव पर खड़ा होता है। बौद्ध–धर्म का आधार भी कुछ दार्शनिक सिद्धान्त है। गौतम बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया, बुद्ध ने जो भी सार तत्व अनुभव किया उसे उपदेशो के माध्यम से अनुयायियो को दिया गौतम बुद्ध ने जो भी दार्शनिक सिद्धान्त प्रतिपादित किए और जो भी शिक्षाएं दी वे आज भारत ही नहीं, विश्व के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण अमूल्य निधियाँ है।'[1]

The philosophy of every religion is a philosophy. The importance of religion stands on the foundation of building philosophy. Buddhism also has some philosophical principles. Gautama Buddha attained enlightenment, whatever essence Buddha experienced he gave to the disciples through the teachings, whatever philosophical principles Gautam Buddha propounded and whatever teachings he gave today are very valuable for the world, not only for India but also for the world. Funds. '[1]

**मुख्य शब्द :** बुद्ध के मूल सिद्धान्त, आत्मा व जगत, दर्शन।
Basic Principles of Buddha, Soul and World, Philosophy.

**प्रस्तावना**

**अध्ययन के उद्देश्य**

बुद्ध ने आत्मा व जगत् का अत्यन्त स्पष्ट रूप से विवेचन किया है। दर्शनशास्त्र प्राणियों की जिज्ञासाओं को शान्त करने का उपचार है। वस्तुतः क्या, क्यों और कैसे? इन्हीं जिज्ञासाओं ने दर्शन–शास्त्र को जन्म दिया है। बुद्ध ने जगत् व आत्मा के सम्बन्ध में विचारों को प्रकट किया है। उन्हें हम इस प्रकार जान सकते है :–

1. ईश्वर नही है।
2. आत्मा अनित्य है।
3. ग्रन्थ अपौरूषेय या स्वतः प्रमाण नहीं है।
4. जीवन केवल शरीर की परिधा में नहीं है।

प्रथम तीन सिद्धान्त नकारात्मक और अन्तिम एक स्वीकारात्मक है।[2]

**प्रतीत्यसमुत्पाद**

इसका अर्थ है 'प्राप्त होकर प्रादुर्भाव' अर्थात् इसके होने पर वह होता है। इसकी उत्पत्ति से उसकी उत्पत्ति होती है। दुःख कैसे उत्पन्न होता है– यह ज्ञान दुःख को दूर करने के लिए आवश्यक होता है, यही प्रतीत्य– समुत्पाद होता है।

बुद्ध ने वैदिक ईश्वर वादी सिद्धान्त को उलट दिया। बुद्ध ने प्रतीत्य–समुत्पाद सिद्धान्त के द्वारा ईश्वर की अस्थिति को स्पष्ट कर दिया है। प्रतीत्य–समुत्पाद सिद्धान्त के अनुसार एक वस्तु का विनाश होने पर ही दूसरी वस्तु का निर्माण होता है। ईश्वर को जगत् का उत्पादन कारण नहीं माना जा सकता, क्योंकि फिर जगत् के भले–बुरे सभी कर्म ईश्वर में भी होने चाहिए। जबकि ईश्वर असल निर्विकार और गुण दोषों से रहित है। यदि ईश्वर को निमित्तकारण माना जाय तो उपादान का होना आवश्यक है। जैसे कुम्हार मिट्टी से घड़े को बनाता है, कुम्हार निमित्त कारण, मिट्टी उपादान कारण और जगत कार्य है तो ईश्वर निमित्त होने पर जगत का उपादान कारण कुछ भी ज्ञात नहीं होता। बिना उपादान कारण के कार्य सम्भव नहीं। यदि उपादान कारण को न माने तो अभाव

से भाव की उत्पत्ति माननी चाहिए और कारण कार्य मिथ्या सिद्ध हो जाता है। यही प्रतीत समुत्पाद होता है। इसके निम्नलिखित 12 अंग हैः–'[3]

1. अविधा
2. संस्कार
3. विज्ञान
4. नामरूप
5. षड़ायतन
6. स्पर्श
7. वेदना
8. तृष्णा
9. उपादान
10. भव
11. जाति
12. जरामरण

**अविधा**

जो दुःख को नहीं जानता है दुःख समुदाय को नही ं जानता, दुख निरोध व दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा को नहीं जानता है उसे अविधा कहते है इस अविधा के हट जाने या रूक जाने से संस्कार नही ं उत्पन्न हो पाते इस तरह सारा दुःख समूह रूक जाता है।'[4]

**संस्कार**

यह पूर्व जन्म की कर्मावस्था होती है। संस्कार को तीन भागों में विभक्त किया है यथा– कार्य संस्कार, वाक् संस्कार, चित्त संस्कार।'[5]

**विज्ञान**

प्रति सन्धि– क्षण में कुक्षि के जो पच्च संघ होते है वही विज्ञान है।'[6]

**नाम रूप**

वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान ये नाम कहलाते है और चार महा भूतों को लेकर जो रूप होता है। उसे रूप कहते है। इस तरह यह नाम रूप कहलाता है।'[7]

**षड़ायतन**

चक्षु आयतन श्रोत्र आयतन, घ्राण आयतन, जिह्वा आयतन, कार्य आयतन, मन आयतन आदि को षडायतन कहते है।'[8]

**स्पर्श**

चक्षु संस्पर्श, श्रोत्र संस्पर्श, घ्राण संस्पर्श, जिह्वा संस्पर्श ं, काया संस्पर्श, मन संस्पर्श आदि को स्पर्श कहते है।'[9]

**वेदना**

चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, काय, मन आदि के संस्पर्श से होने वाली वेदना को वेदना कहते है।'[10]

**तृष्णा**

भोग व मैथुन की कामना करना ही तृष्णा। रूप, काम, गुण और मैथुन के प्रति राग उत्पन्न होता है। भोगो की पर्येष्टि प्रारम्भ करने से ही तृष्णा नष्ट होती है।'[11]

**डपादान**

काम उपादान, मिथ्या दृष्टि उपादान शील व्रत उपादान, आत्मवाद उपादान आदि को उपादान करते है।'[12]

**भव**

काम भव, रूप भव, अरूप भव को ही भव कहते है। या फिर जीव का किसी अवस्था में कर्म करना ही भव है।'[13]

**जाति**

जो उन जीवों के उन योनियों में जन्म लेना, पैदा हो जाना, चला आना आकर प्रकट हो जाना, स्कन्धों का प्रादुभाव होना, आयतनों का प्रतिलाभ करना ही जाति कहलाती है।'[14]

**जरामरण**

जो उन–उन जीवो के उन–उन योनियों में बूढ़ा हो जाना, पुराना हो जाना दाँतो का टूट जाना, बाल सफेद हो जाना, झुर्रिया पड़जाना, उम्र का खात्मा और इन्द्रियों का शिथिल हो जाना आदि ही जरा कहलाता है। जो उन–उन जीवो के उन–उन योनियों से खिसक जाना, कट जाना, अन्तर्धान हो जाना, मृत्यु–मरण, स्कन्धों का छिन्न–भिन्न हो जाना, चोला को छोड़ देना ही मरण कहते है। इस प्रकार जरामरण कहलाता है।'[15]

**निष्कर्ष**

इस प्रकार उपयुक्त सिद्धान्त से बौद्ध दर्शन का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है कि यह सिद्धान्त बुद्ध की शिक्षा और दर्शन पर अवलम्बित है यह पहला सिद्धान्त बौध धर्म को दुनिया के अन्य धर्मों से पृथक करते है और बड़ी परतन्त्रताओ से मनुष्य को मुक्त करते है। वही बुद्ध धर्म है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *पालि साहित्य का इतिहास डा0 प्रभा अग्रवाल पेज–56*
2. *मज्झिम निकाय महापंडित राहुल सांकृत्यायन पृष्ठ 1/4भूमिका से1/2*
3. *पालि साहित्य का इतिहास डा0 प्रभा अग्रवाल पृष्ठ 116, 117*
4. *संयुक्त निकाय द्वितीय भाग पृष्ठ 4 सम्पादक– भिक्षु जगदीश कश्यप*
5. *संयुक्त निकाय द्वितीय भाग पृष्ठ 4*
6. *पा0सा0 इति पृष्ठ 117 1/4डा0 प्रभा अग्रवाल1/2*

7. संयु0नि0 द्वि0 भाग पृष्ठ 4
8. संयु0 नि0 द्वि0 भा0 पृ0 4
9. स0 नि0 द्वि0 भा0 पृ0 4
10. स0 नि0 द्वि0 भा0 पृ0 4
11. पालि साहित्य का इतिहास डा0 प्रभा अग्रवाल पृ0 117
12. स0 नि0 द्वि0 भा0 पृ0 4
13. पा0 लि0 पृष्ठ 117 1/4डा0 प्रभा अग्रवाल1/2
14. संयु0 नि0 द्वि0 भा0 पृष्ठ 4
15. संयु0 नि0 द्वि0 भा0 पृष्ठ 4